IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में आधुनिक शिक्षा की स्थापना में राजा राममोहन रॉय की भूमिका का अध्ययन

[1]आशुतोष देव पाण्डेय [2]डॉ रजनीकांत पाण्डेय

[1]शोध छात्र, [2]आचार्य

[1,2] राजनीति विज्ञान विभाग

[1,2] दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, भारत

- **शोध सार**

आधुनिक भारत के जनक के रूप में संबोधित किए जाने वाले राजा राम मोहन रॉय ने भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। वैचारिक प्रतिभा के धनी राजा राम मोहन रॉय संभवतः प्रथम भारतीय थे जिन्होंने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की कमियों को समझा एवं आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने आधुनिक शिक्षा को तार्किक एवं व्यावहारिक ज्ञान के प्रमुख साधन के रूप में देखा एवं इसकी स्थापना एवं प्रसार हेतु भरसक प्रयत्न किया। उन्हीं के सहयोग से भारत में संभवतः आधुनिक शिक्षा के प्रथम संस्थान हिंदू कॉलेज की स्थापना 1817 में स्थापना हुई। इससे इतर भी रॉय ने आधुनिक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना में सहयोग किया एवं स्वयं आधुनिक शिक्षा के प्रसार हेतु 1822 में एंग्लो–हिंदू स्कूल तथा 1826 में वेदांत कॉलेज की स्थापना की। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य, राजा राम मोहन रॉय के इन प्रयासों, प्रयासों की आवश्यकता एवं महत्व का अध्ययन है।

- **मुख्य शब्द:-** आधुनिक शिक्षा, तार्किकता, वैज्ञानिक समझ, शैक्षिक सुधार

1. परिचय

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की विभिन्न विशेषताओं में से एक यह भी है कि, यह न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप में विद्यमान उस समय की सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों के खिलाफ भी निर्देशित थी। इस दौर में कई व्यक्तित्व उभरे जिन्होंने सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों और कठोरता को चुनौती दी। उनमें से एक प्रमुख नाम राजा राम मोहन रॉय का है। उनका जन्म 22 मई 1772 को बंगाल प्रेसीडेंसी के राधाननगर में हुआ। यह दौर भारत में गहरे सामाजिक और धार्मिक ठहराव का दौर था। समाज असमानता, अन्याय और अज्ञानता को बढ़ावा देने वाली प्रथाओं और परंपराओं से बंधा हुआ था। पितृसत्ता अपने चरम पर थी। समाज एवं परिवार में महिलाओं की भूमिका और स्थिति पूरी तरह से पुरुषों द्वारा निर्धारित थी। सती जैसी प्रथाएँ, जहाँ विधवाओं को उनके पति के साथ चिता पर जला दिया जाता था, पितृसत्ता के सबसे वीभत्स उदाहरणों में से एक था। बाल विवाह एवं बहु विवाह जैसी कुरीतियां सामान्य तौर पर प्रचलित थी।[1] भारतीय समाज से तार्किक एवं नैतिक मूल्यों का हास हो रहा था। अध्यात्म जो वर्षों से भारतीय समाज की प्रेरक शक्ति रहा था उसका स्थान अंधविश्वास एवं कर्मकांड ने ले लिया था। समाज में मूर्ति पूजा, बली एवं विशिष्ट अनुष्ठानों की भरमार थी। जाति प्रथा एवं छुआछूत जैसी प्रथाओं के परिणामस्वरूप सामाजिक ताना बाना जर्जर हो चुका था। ब्रिटिश शासन की स्थापना ने समाज के इन दोषों को उजागर कर दिया। समाज में सार्थक बदलाव की आवश्यकता महसूस की जाने लगी

थी। इसी परिप्रेक्ष्य में राजा राम मोहन रॉय का आविर्भाव एक महान समाज सुधारक के तौर पर हुआ। उन्होंने समाज को परिवर्तन की वह दिशा दिखाई जिसकी इसे आवश्यकता थी। वे वैचारिक प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे एवं संस्कृत, पर्शियन, अरबी, लैटिन एवं अंग्रेजी जैसी भाषाओं की अच्छी समझ रखते थे। उन्होंने विभिन्न धर्म ग्रंथों का उनके मूल अनुवादों में अध्ययन किया था। अतः वे समाज में व्याप्त आडंबरों एवं कर्मकांडों को भलीभांति समझते थे। राजा राम मोहन रॉय प्रारंभ से ही भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ थे। उन्होंने सर्वप्रथम वेदों जैसे प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों के आधार पर इन अनुष्ठानों एवं कुरीतियों का विरोध किया, किंतु शीघ्र ही उन्हें अहसास हो गया की भारतीय समाज में वैज्ञानिक समझ एवं तर्कसंगत सोच के प्रसार के बिना इन कुरीतियों का अंत संभव नहीं है। वे तत्कालीन संस्कृत शिक्षा प्रणाली की भारतीय समाज में तर्कसंगत सोच विकसित करने में असमर्थता को भली भांति समझते थे। इसलिए, भारतीयों में तर्कसंगत सोच और वैज्ञानिक समझ विकसित करने के लिए, उन्होंने आधुनिक शिक्षा के रूप में चिकित्सा शास्त्र, गणित, विज्ञान एवं अंग्रेजी भाषा आदि का अध्ययन प्रस्तावित किया। वे अंग्रेजी शिक्षा में निहित स्वतंत्रता, समानता एवं तार्किकता के मूल्यों से काफी प्रभावित थे। उन्हीं के प्रयासों से भारत में अंग्रेजी शिक्षा के पहले सार्वजनिक संस्थान कलकत्ता के हिंदू कॉलेज की स्थापना 1817 में हुई थी। इसकी उत्पत्ति 1815 में राम मोहन रॉय की आत्मीय सभा में एक चर्चा के कारण हुई थी।[2] आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने केवल औपनिवेशिक प्रशासन और मिशनरी संस्थाओं के साथ सहयोग किया बल्कि स्वयं भी संस्थानों की स्थापना की। आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा के लिए उनके निरंतर प्रयासों को समझने के लिए, सबसे पहले हमें पारंपरिक संस्कृत शिक्षा प्रणाली के दोषों को समझना होगा जैसा कि रॉय देखते हैं।

2. पारंपरिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था की आलोचना

राजा राम मोहन रॉय के समय में शिक्षा संस्थाएँ प्रभाव हीनता के स्तर पर पहुंच चुकी थी। प्रारंभिक स्तर पर प्राथमिक अंकगणित और भारतीय भाषाओं में कुछ प्राथमिक शिक्षा दी जा रही थी। उच्च शिक्षा के स्तर पर संस्कृत या फ़ारसी के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा धार्मिक एवं रूढ़िवादी पाठ्यक्रम तक ही सीमित थी, जिसमें वैज्ञानिक या प्रायोगिक ज्ञान का नितांत अभाव था। रॉय आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा करने में पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की असमर्थता को पूर्णतः समझते थे तथा निरंतर निजी प्रयासों या प्रशासनिक सहयोग के माध्यम से आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने को प्रयासरत थे। 1813 के चार्टर अधिनियम के माध्यम से ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतवासियों के शैक्षिक उत्थान पर एक लाख रुपए खर्च करने का प्रस्ताव पारित किया। चार्टर के कार्यान्वयन के क्रम में कंपनी ने एक पारंपरिक संस्कृत विद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया। इसके विरोध में लॉर्ड एमहर्स्ट को लिखे एक पत्र में, रॉय ने पारंपरिक संस्कृत विद्यालय की स्थापना के प्रयासों की आलोचना की एवं पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में मौजूद दोषों को इंगित किया। उन्होंने लिखा 'हम पाते हैं कि सरकार हिंदू पंडितों के अधीन एक संस्कृत विद्यालय स्थापित कर रही है ताकि भारत में पहले से ही प्रचलित ज्ञान को बढ़ावा दिया जा सके। इस पाठशाला से केवल यही उम्मीद की जा सकती है कि यह युवाओं के दिमाग को व्याकरण की बारीकियों और आध्यात्मिक भेद के ज्ञान से भर देगी , जिसका इसे प्राप्त करने वाले या समाज के लिए बहुत कम या कोई व्यावहारिक उपयोग नहीं है। छात्र वहां वह सीखेंगे जो दो हजार साल पहले से ज्ञात था, जो पहले से ही भारत के सभी हिस्सों में पढ़ाया जाता है।[3] उनके अनुसार संस्कृत भाषा इतनी कठिन है कि इसे सीखने में लगभग संपूर्ण जीवन व्यतीत हो सकता है और यह भाषा सदियों से ज्ञान के व्यापक प्रसार में एक विवेचनीय बाधा के रूप में उपस्थित रही है। वे अपने पत्र में यह बात दृढ़ता से कहते है कि संस्कृत भाषा एवं शिक्षा प्रणाली में निहित ज्ञान इसे प्राप्त करने में किए गए श्रम के अनुपात में उपयोगी नहीं है। उदाहरण के तौर पर उन्होंने लिखा है, 'संस्कृत भाषा का शब्द है खाद्, जिसका अर्थ है खाना। वही खादति का अर्थ है, वह खाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि वह पुरुष है , स्त्री है या वह वस्तु है'।

आगे वे लिखते है की ' न तो वेदांत द्वारा सुझाए गए विषयों की किस प्रकार आत्मा देवता में लीन होती है, कोई सुधार हो सकता है। न ही मीमांसा के छात्र को यह जानने से कोई आवश्यक लाभ मिल सकता है कि वेदांत के कुछ अंशों का उच्चारण करने से बकरे की हत्या करने वाला क्या पापमुक्त हो जाता है? वेदों के अंशों का वास्तविक स्वरूप और क्रियाशील प्रभाव क्या है? आदि।' इन्ही कमियों को ध्यान में रखते हुए राजा राम मोहन रॉय आधुनिक शिक्षा की वकालत करते है।

3. आधुनिक शिक्षा की स्थापना की दिशा में प्रयास

राजा राम मोहन रॉय का मानना था कि भारत में वैज्ञानिक शिक्षा की शुरुआत होनी चाहिए ताकि विज्ञान के अध्ययन से लोग अंधविश्वास, अज्ञानता से मुक्त हो सकें और यूरोप की तरह ज्ञान के मार्ग पर चल सकें। वे बेकन के दर्शन से बहुत प्रभावित थे, जो ज्ञान की प्रकृति की वैज्ञानिक जांच पर जोर देता था। लॉर्ड बेकन से पहले यूरोप में शैक्षिक संस्थान उसी तरह के थे जैसे राय के समय भारत में थे। बेकन की वैज्ञानिक सोच ने यूरोपीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रॉय भारत में भी ऐसा ही करने का लक्ष्य रखते थे। उन्होंने इस योजना को दो तरह से क्रियान्वित किया, पहला स्कूलों एवं कॉलेज की स्थापना में सक्रिय सहयोग तथा दूसरा इस दिशा में निजी प्रयास के माध्यम से।

शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना में सहयोग

अंग्रेजी शिक्षा से संबंधित सबसे पहला सार्वजनिक संस्थान 1817 में स्थापित कलकत्ता का हिंदू कॉलेज था। रॉय इस संस्थान के मुख्य प्रस्ताव कर्ताओं में से एक थे। जैसा कि अलेक्जेंडर डफ ने हाउस ऑफ कॉमन्स की चयन समिति को बताया, 'अंग्रेजी शिक्षा की प्रणाली बंगाल में बहुत सरल तरीके से शुरू हुई। इस काम में दो लोग शामिल थे- एक डेविड हेयर और दूसरे राम मोहन रॉय।[2] वर्ष 1815 में आत्मीय सभा की एक बैठक में, रॉय ने एक ऐसी सभा या सम्मेलन की स्थापना का प्रस्ताव रखा जहाँ एकेश्वरवाद की शिक्षा दी जा सके। चर्चा आगे बढ़ी और डेविड हरे के प्रस्ताव के साथ, एक अंग्रेजी स्कूल या कॉलेज स्थापित करने के विचार को अंतिम रूप दिया गया। जल्द ही एक परिपत्र तैयार किया गया जिसने सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सर हाइड ईस्ट सहित कई यूरोपीय लोगों का ध्यान आकर्षित किया। जिसके परिणति हिंदू कॉलेज की स्थापना के रूप में हुई। वे न केवल निजी प्रयासों को बढ़ावा दे रहे थे बल्कि ब्रिटिश शासन पर भी अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देने को लेकर दबाव बना रहे थे। एम्हर्स्ट को लिखे पत्र में उन्होंने दो टूक कहा था कि, 'यदि सरकार का उद्देश्य भारतीय समाज का उत्थान है, तो उसे अधिक उदार और प्रबुद्ध शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना चाहिए जिसमें गणित, प्राकृतिक दर्शन, रसायन विज्ञान, शरीर रचना विज्ञान तथा अन्य उपयोगी विज्ञान शामिल होंगे, जिसे यूरोप में शिक्षित प्रतिभाशाली और विद्वान सज्जनों को नियुक्त करके तथा आवश्यक पुस्तकों एवं अन्य आवश्यक संसाधनों से सुसज्जित एक विद्यालय की स्थापना करके प्रस्तावित धनराशि का सदुपयोग किया जा सकता है।[3]

वे यूरोप के परिचित लोगों से भारत में शैक्षिक क्रियाकलापों की शुरुआत को लेकर लिखते रहते थे। सोफिया कॉलेट ने लिखा है कि ' हम उन्हे लगातार इंग्लैंड और अमेरिका के परिचित यूनिटेरियन नेताओ को भारतीय समुदाय के मध्य यूरोपीय शिक्षा, विज्ञान एवं ईसाई नैतिकता के जानकार एवं सक्षम शिक्षक जैसा की उनकी परिस्थितियां स्वीकार करती है, भेजने के लिए बार-बार लिखते हुए पाते है।' इन प्रयासों के कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आए जिसमे प्रमुख है, अलेक्जेंडर डफ का भारत आगमन। स्कॉटिश मिशनरी डफ का 1830 में भारत आगमन हुआ। डफ ने कलकत्ता में स्कॉटिश चर्च कॉलेज की स्थापना की जिसमे राजा राम मोहन रॉय ने पूर्णरूपेण सहयोग किया। ब्रह्मो सभा का हाल उपलब्ध कराने के साथ ही, उन्होंने शुरुआती छात्र भी उपलब्ध कराए। ' संस्थान ने शीघ्र ही काफी सफलता अर्जित की। पहले दिन पाँच लड़कों से शुरू होकर चार दिन बाद संख्या 200 से अधिक हो गई'।[4] डफ के संस्थान को मिली सफलता ने अंग्रेजी शिक्षा की मांग एवं महत्व को स्पष्ट कर दिया था। शीघ्र ही ब्रिटिश शासन ने भी मैकाले मिनट्स के माध्यम से इसकी पुष्टि कर दी।

राजा राम मोहन रॉय के व्यक्तिगत प्रयास

राजा राम मोहन रॉय ने आधुनिक शिक्षा के प्रसार की दिशा में स्वयं भी शैक्षिक संस्थानों की स्थापना की। उन्होंने 1822 में आधिकारिक रूप से एंग्लो-हिंदू स्कूल की स्थापना की। जहां बंगाली युवाओं को अंग्रेजी भाषा में मुफ्त शिक्षा प्रदान की जाती थी। इस स्कूल में तकनीकी विज्ञान, वोल्टेयर का सिद्धांत, उग्रिड की ज्यामिति, यांत्रिकी, खगोल विज्ञान जैसे आधुनिक विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी।[5] आगे चल कर उन्होंने 1826 में वेदांत कॉलेज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य पश्चिम विज्ञान के साथ पूर्व के ज्ञान का सामंजस्य स्थापित करना था। इस कॉलेज में दर्शन और साहित्य के अलावा, अंग्रेजी भाषा एवं विज्ञान तथा गणित जैसे विषयों की शिक्षा भी दी जाती थी। मैक्स मुलर ने ' रॉय को पूर्व और पश्चिम के बीच संश्लेषण को प्रभावित करने वाला पहला व्यक्ति माना था।[6] उनके प्रयास केवल स्कूलों की स्थापना तक सीमित नहीं थे, उन्होंने स्कूली शिक्षा के लिए उपयुक्त पुस्तकें भी लिखी। उन्होंने वर्ष 1815 से 1830 तक लगभग 30 पुस्तकें लिखीं।

4. राजा राम मोहन रॉय के शैक्षिक आदर्शों एवं उद्देश्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता

राजा राम मोहन रॉय ने जिन शैक्षिक आदर्शों एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए आधुनिक शिक्षा की वकालत की थी, वे वर्तमान में भी प्रासंगिक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति[7] – 2020 में उल्लिखित आदर्शों एवं उद्देश्यों तथा राजा राम मोहन रॉय के शैक्षिक आदर्शों एवं उद्देश्यों में समरूपता के तत्व देखें जा सकते है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 –

- रचनात्मकता एवं तार्किकता।
- समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा।
- समग्र एवं बहु – विषयक शिक्षा।
- जहां सही लगे भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन ज्ञान प्रणालियों को शामिल करना।

जैसे आदर्शों एवं उद्देश्यों को शामिल करती है। राजा राम मोहन रॉय के स्त्री शिक्षा की वकालत, वेदांत कॉलेज की स्थापना के माध्यम से भारत के प्राचीन ज्ञान परंपरा के साथ पश्चिम के ज्ञान का समन्वय एवं आधुनिक शिक्षा के तौर पर वैज्ञानिक शिक्षा के निरंतर प्रोत्साहन के माध्यम से भारतीय समाज में तार्किक एवं व्यावहारिक ज्ञान के प्रसार के प्रयासों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के इन आदर्शों एवं उद्देश्यों के पूर्व संकेत देखे जा सकते है।

5. निष्कर्ष

राजा राम मोहन रॉय का जीवन सामाजिक सुधार एवं उन्नति के प्रति प्रतिबद्धता का जीवंत चित्रण है। वे एक प्रगतिशील विचारों वाले व्यक्ति थे जो भारतीय समाज की दयनीय दशा को लेकर चिंतित थे एवं इस स्थिति में सुधार को लेकर निरंतर प्रयासरत थे। उन्होंने, न केवल तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों का दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध किया अपितु आधुनिक शिक्षा की स्थापना एवं प्रसार के माध्यम से भविष्य के आंदोलनों के लिए बौद्धिक एवं नैतिक आधार तैयार करने का कार्य किया। वे संभवतः पहले भारतीय थे जिन्होंने अंग्रेजी शिक्षा की मुखर वकालत की। अंग्रेजी भाषा एवं विज्ञान, दर्शन एवं गणित जैसे विषयों के अध्ययन को बढ़ावा देकर उन्होंने भारत के लिए वैश्विक ज्ञान के द्वार खोले। उन्हीं के प्रयासों से 1817 में कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना हुई, जिसे अंग्रेजी शिक्षा के प्रारंभिक शिक्षण संस्थानों में से एक कहा जा सकता है। इससे इतर भी राजा राम मोहन रॉय ने कई शिक्षण संस्थानों की स्थापना में सहयोग किया एवं स्वयं शैक्षिक संस्थानों की स्थापना की। इन संस्थानों ने एक ऐसा शिक्षित वर्ग तैयार किया जिसने आगे चलकर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक सुधारो का नेतृत्व किया एवं अंततः भारतीय स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान दिया।

सन्दर्भ

1. Sinha, B. (2021). *Raja Ram Mohan Roy on paving the way for women's education*. IJCRT.
2. Collet, S. D. (1914). *The life and letters of Raja Rammohun Roy*. Sadharan Brahmo Samaj.
3. *A letter on English education.*(1901) In E.C. Bose, *The English works of Raja Ram Mohan Roy* (pp. 471-474). Panini office, Allahabad.
4. Emmott,D.H. (1965). *Alexander Duff and the Foundation of Modern Education in India.* Taylor & francis, Ltd.
5. Baugh, A. (2021). *Raja Ram Mohan Roy contributions to women rights and education : its current relevance.* Gujarat University E-journal. https://hrdc.gujaratuniversity.ac.in/Uploads/EJournalDetail/30/1047/32.pdf
6. Tagore, S. N. (1958). *Builders of modern India: Raja Rammohun Roy.* Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.
7. Government of India. (2020). *National education policy 2020.* Ministry of Human Resource Development. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
8. Syed, M.H. (2011). *Raja Ram Mohan Roy* (pp. 209-216). Himalaya books Pvt. Ltd.
9. Tyagi, R. (2015), '*Aadhunik bhaarat ka rajneetik chintan: Ek Vimarsh',* Hindi Madhyam Karyanvay Nideshaalay, University of Delhi.
10. Fatima, T. (2021). *Women rights and Hindu law of inheritance : the approach of RAMMOHUN Roy.* Indian History Congress. https://www.jstor.org/stable/44147711
11. Sircar, C. (2020). *Rammohun Roy: His Contribution to the Making of India.* Studies in people's history.
12. Young, U. (2017). *RAMMOHAN ROY "and the Modern World".* JSTOR. https://www.jstor.org/stable/29753635